गया श्राद्ध – कतिपय मिथक एवं उनका प्रत्याख्यान

डॉ0 विमलेश कुमार पाण्डेय*

उत्तराखण्ड में गन्धमादन पर्वत पर अलकनन्दा [1] के दाहिने तट पर बद्रीनाथ का प्रसिद्ध मंदिर एवं तीर्थ है, जिसकी गणना भारत के चार प्रसिद्ध धामों (तीन अन्य–जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम तथा द्वारका) में की जाती है। वराहपुराण [2] में बदरिकाश्रम तीर्थ पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। बद्रीनाथ में अलकनन्दा का न केवल प्रवाह अति तीव्र है अपितु जल भी अत्यन्त शीतल है। अतः मैदानी क्षेत्र के तीर्थयात्री मंदिर के नीचे समीप में स्थित तप्तकुण्ड में ही स्नान करके शालग्रामशिला से बनी बद्रीविशाल भगवान की चतुर्भुजी मूर्ति का दर्शन–पूजन करते हैं। तप्तकुण्ड के नीचे सड़क पर लगभग 280 मीटर दूर अलकनन्दा के किनारे एक शिला है जिसे ब्रह्मकपाल या ब्रह्मकपाली या कपालमोचन कहा जाता है। अनुश्रुति है कि भगवान शंकर ने जब कटुभाषी होने के कारण ब्रह्मा का पंचम शिर काट दिया तो वह उनके हाथ में चिपक गया। समस्त तीर्थों की यात्रा करते हुए जब भगवान शंकर यहाँ आए तो वह हाथ में चिपका कपाल स्वतः यहाँ गिर पड़ा था। ब्रह्मकपाली पर बद्रीनाथ की यात्रा करने वाले श्राद्ध तथा पिण्डदान करते हैं। मत्स्यपुराण[3] में कहा गया है कि बदरी तीर्थ में श्राद्ध करने वाले परम गति को प्राप्त करते हैं। कूर्मपुराण[4] के अनुसार बदर्याश्रम में समाहित मन से श्राद्ध करके मनुष्य अपने सभी पितरों को मुक्त कर देता है।

मिथक एक : बद्रीनाथ में ब्रह्मकपाली के सम्बन्ध में सनत्कुमार संहिता[5] में दो श्लोक उद्धृत है, जिसके अनुसार ''प्राचीन काल में जहाँ ब्रह्मा का शिर कपाल गिरा था वहीं बदरी क्षेत्र में जो पुरुष पिण्डदान करने में समर्थ होते हुए यदि मोहवश गया में पिण्डदान करता है तो वह अपने पितरों का अधःपतन करा देता है और उनसे शापित होता है।'' इस वक्तव्य कि अतार्किक व्याख्या कर कतिपय महानुभावों ने यह सिद्धान्त स्थापित किया कि बदरी क्षेत्र में पिण्डदान करने के बाद गया में पिण्डदान नहीं करना चाहिए। बद्रीनाथ की यात्रा एवं वहां पिण्डदान करने के बाद वहां के तीर्थपुरोहितों ने मुझसे भी कहा था कि अब कहीं पिण्डदान करने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु यह निर्वचन सर्वथा अयौक्तिक तथा निर्मूल है। धर्मशास्त्रों में गया में पिण्डदान की अतिशय प्रतिष्ठा निर्गदित है। गरुणपुराण[6] के अनुसार ब्रह्मज्ञान, गयाश्राद्ध, गोशाला में मृत्यु तथा कुरुक्षेत्र में निवास–ये चारों मुक्ति के साधन हैं। अन्यत्र [7] आख्यात है कि

* **एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास संस्कृति, एवं पुरातत्व विभाग, सल्तनत बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदलापुर, जौनपुर**

1. गंगा की जो धारा कैलाश तथा बदरिकाश्रम से होकर बहती है उसे अलकनन्दा कहा जाता है। आगे चलकर देवप्रयाग में यह सीधी धारा में मिल जाती है।
2. वराहपुराण, अध्याय 141
3. तथा च बदरीतीर्थं गणतीर्थं तथैव च। जयन्तं विजयं चैव शक्रतीर्थं तथैव च।। 32/73
   .....। एतेषु श्राद्धदातारः प्रयान्ति परमां गतिम्।। 32/75
4. कूर्मपुराण अध्याय 36, 47–48
5. शिरःकपालं यत्रैतत्पपात ब्रह्मणः पुरा।
   तत्रैव बदरीक्षेत्रे पिण्डं दातु प्रभुः पुमान् ।।
   मोहोद् गयायां दद्याद्यः स पितृन् पातयेत् स्वकान्।
   लभते च ततः शापं नारदैतन्मयोदितम् ।। दौलतराम गौड़ सम्पादित निर्णयसिन्धु, पृ. 756 तथा गीताप्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित अन्त्यकर्म–श्राद्धप्रकाश, पृ0 18
6. ब्रह्मज्ञानं गयाश्राद्धं गोगृहे मरणं तथा।
   वासः पुंसा कुरुक्षेत्रे मुक्तिरेसा चतुर्विधा।। गरुड़पुराण 82/15, द्रष्टव्य नारदपुराण, उत्तरभाग।
7. ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुवर्नंगनागमः।
   पापं तत्संगजं सर्वं गयाश्राद्धाद् विनश्यति।। वही, 82/17, द्रष्टव्य नारदपुराण, वही

ब्रह्महत्या, सुरापान, स्वर्ण की चोरी, गुरुपत्नीगमन और इनसे संसर्गजनित महापातक गया में पिण्डदान से नष्ट हो जाते हैं। अपने पुत्र अथवा पिण्डदान देने के अधिकारी अन्य किसी वंशज के द्वारा जब गया क्षेत्र में स्थित गयाकूप में जिस किसी के नाम से पिण्डदान दिया जाता है उसे शाश्वत ब्रह्मगति मिलती है।[8] गयाशीर्षतीर्थ में नामोच्चार के साथ–साथ पितरों को पिण्डदान करने से नरकलोक में रहने वाले पितृजन स्वर्गलोक तथा स्वर्ग में रहने वाले पितरों को मोक्ष प्राप्त होता है। कूर्मपुराण[9] में विवृत है कि 'गया नामक परमगुह्य तीर्थ पितरों को अत्यन्त प्रिय है। वहाँ पिण्डदान करके मनुष्य पुनर्जन्म नहीं प्राप्त करता। गया की यात्रा करने में समर्थ होते हुए भी जो वहाँ नहीं जाता उसके सम्बन्ध में पितर शोक करते हैं। उसका अन्य सभी परिश्रम व्यर्थ होता है।' गया में श्राद्ध एवं पिण्डदान की महत्ता तथा एक प्रकार से अनिवार्यता को देखते हुए यह कहना कि ब्रह्मकपाली में पिण्डदान करने के बाद गया या अन्यत्र श्राद्ध या पिण्डदान नहीं करना चाहिए सर्वथा अनुचित है। वास्तव में सनत्कुमारसंहिता के उल्लेख में प्रयुक्त प्रभुः + पुमान् शब्द की गलत व्याख्या करने से ही पूर्वमत स्थिर किया गया। कुछ विद्वानों ने सुझाया है कि इस पद का सही अर्थ है– बदरीक्षेत्र में श्राद्ध करने में समर्थ होते हुए भी यदि कोई व्यक्ति गया में श्राद्ध करके ही सन्तुष्ट हो जाय तो उसके पितृगणों का अधःपतन हो जाता है। इनके विचार से गया श्राद्ध करने के बाद समर्थवान को ब्रह्मकपाली में श्राद्ध करना चाहिए। किन्तु यह कथन भी उचित नहीं है। गया श्राद्ध अकेले ही पितरों की मुक्ति के लिए पर्याप्त है। ब्रह्मकपाली पर श्राद्ध तथा पिण्डदान ऐच्छिक है। पुराणों में तथा धर्मग्रन्थों में गया श्राद्ध का ही विशद् विवेचन है तथा इसकी महत्ता प्रतिपादित है। ब्रह्मकपाली पर श्राद्ध की अनिवार्यता पर विशेष बल नहीं दिया गया है। अथच यदि सनत्कुमारसंहिता में ब्रह्मकपाली में श्राद्ध तथा पिण्डदान की महत्ता तथा वहाँ श्राद्ध तथा पिण्डदान करने के बाद गया में श्राद्ध तथा पिण्डदान करने के निषेध की घोषणा को सही भी मान लिया जाय तो हमें उसे लेखक की अतिशयोक्ति करने की बद्धमूलता में आशातीत वृद्धि का परिणाम ही मानना पड़ेगा। लेखकों से देश, निवास स्थान या तीर्थं स्थानों से उनके विशेष परिचय तथा अनुराग से ही उनमें यह प्रवृत्ति विकसित होती है। कतिपय पुराणों तथा महात्म्यों में कभी–कदा किसी तीर्थ विशेष की प्रशस्ति इतनी अधिक कर दी गयी कि दूसरे अन्य तीर्थ उनके सामने नगण्य हो गये। उदाहरणार्थ पद्मपुराण[10] में पुष्कर को संसार में सर्वश्रेष्ठ तीर्थ मान लिया गया। इसी प्रकार महाभारतकार[11] ने घोषणा की कि पुष्कर में स्नान तथा देव एवं पितृपूजन से दश अश्वमेध यज्ञ करने का फल मिलता है। वाराणसी की प्रशंसा करते हुए कूर्मपुराण[12] में कहा गया है कि इससे बढ़कर न कोई स्थान है, न कोई ऐसा होगा। संभवतः सनत्कुमार संहिताकार ने भी इसी विचारधारा का अनुसरण किया तथा यह मान लिया कि ब्रह्मकपाली में श्राद्ध तथा पिण्डदान करने के बाद गया में पिण्डदान की आवश्यकता नहीं है।

मिथक दो : आजकल यह भ्रामक तथा मिथ्या प्रचार अथवा यों कहिए लोकमत प्रचलित है कि गया श्राद्ध अथवा ब्रह्मकपाली पर श्राद्ध एवं पिण्डदान करने के बाद घर में वार्षिक श्राद्ध, महालयाश्राद्ध या अन्य पर्वों तथा तिथियों पर श्राद्ध, पिण्डदान तथा तर्पण की आवश्यकता नहीं है। प्रायः देखा भी जाता है कि

---

8. आत्मजो वा तथान्यो वा गयाकूपे यदा तदा।
   यन्नाम्ना पातयेत् पिण्डं तं नयेद्ब्रह्म शाश्वतम्।। वही, 83/61
   गयाशीर्षे तु यः पिण्डान्नाम्ना येषां तु निर्वपेत् ।
   नरकस्था दिवं यान्ति स्वर्गस्था मोक्षमाप्नुयुः।। वही, 84/30
9. गयातीर्थं पर गुह्यं पितृणां चातिवल्लभम् ।
   कृत्वा पिण्डप्रदानं तु न भयो जायते नरः।। उपरिविभाग, 34/7
   गयाऽनिगमनं कर्त्तुः यः शक्तो नाभिगच्छति।
   शोचन्ति पितरस्तं वै वृथा तस्य परिश्रमः।। वही, 34/10
10. पद्मपुराण, पंचम खण्ड, 27–78
11. तत्राभिषेकं यः कुर्यात् पितृदेवार्चने रतः।
    अश्वमेधाद् दशगुणं फलं प्रादुर्मनीषिणः।। वनपर्व, 82/27
12. वाराणस्याः परं स्थानं न भूतं न भविष्यति।
    यत्र नारायणो देवो महादेवो दिवेश्वरः।। पूर्वविभाग, 1–29/63

गया में पिण्डदान करने के बाद लोग घर पर श्राद्ध के अवसरों पर श्राद्ध नहीं करते। कुछ लोग ऐसे अवसरों पर ब्राह्मण को भोजन करा कर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं।[13] किन्तु यह सर्वथा अनुचित है। धर्मशास्त्रों एवं पुराणादिकों में जहाँ गया श्राद्ध एवं पिण्डदान की चर्चा है वहाँ कहीं भी, जहाँ तक मैंने देखा है, यह नहीं लिखा है कि गया में पिण्डदान के बाद श्राद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। यम[14] के अनुसार ''पितृपूजन से आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुष्टि, बल, श्री, पशु, सौख्य तथा धन–धान्य की प्राप्ति होती है। श्राद्ध से बढ़कर श्रेयस्कर कुछ नहीं है, अतः बुद्धिमान व्यक्ति को सभी प्रयत्न कर श्राद्ध करना चाहिए।[15] कूर्मपुराण में आख्यात है कि अमावस्या के दिन पितर लोग वायव्य का रूप धारण कर अपने पुराने घर के द्वार पर आते हैं और देखते हैं कि उनके कुल के लोगों द्वारा श्राद्ध किया जा रहा है कि नहीं। ऐसा वे सूर्यास्त तक देखते हैं। सूर्यास्त के बाद भूख–प्यास से व्याकुल निराश हो जाते हैं। बहुत देर तक दीर्घ श्वास छोड़ते हुए अन्त में अपने वंशजों को कोशते हुए चले जाते हैं। कृष्ण चतुर्दशी[16] को छोड़कर शेष प्रतिपादिक तिथियां, पौष, माघ तथा फाल्गुन मास की अष्टकाएं (कृष्णाष्टमी), अमावस्या, तीनों अन्वष्टकाएं (नवमी) तथा माघपूर्णिमा श्राद्ध के लिए पुण्य तिथियां हैं।[17] मत्स्यपुराण में कहा गया है कि पितृपक्ष तथा भरणी में किया गया श्राद्ध गया श्राद्ध के बराबर है।[18] आनन्दरामायण में यात्राकाण्ड में उल्लेख मिलता है कि स्वयं भगवान राम ने गया में पिण्डदान करने के बाद (गया में महारानी सीता[19] ने पितरों को पिण्डदान दिया था)। सरजू में स्नान करने के बाद दधि–श्राद्ध किया था। अतः गया तथा ब्रह्मकपाली पर श्राद्ध तथा पिण्डदान करने के बाद भी शास्त्रानुमोदित तिथियों, नक्षत्रों, पर्वों तथा माता–पिता के क्षयाह (मृत्युतिथियों) पर श्राद्ध तथा पिण्डदान अवश्य करना चाहिए। परम्परा से जो ऐसा नहीं करते वे प्रमादवश समय तथा अर्थ की बचत के लिए ही ऐसा करते है। श्रृष्यश्रृंग का विचार है कि जिसने चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण के समय श्राद्ध किया मानो उसने सारी पृथ्वी को ब्राह्मण को दे दिया।

मिथक तीन : सामान्यतः लोक परम्परा में यह प्रचलित है कि गया में श्राद्ध एवं पिण्डदान केवल आश्विन कृष्ण पक्ष एवं चैत्र कृष्णपक्ष में ही किया जाय। अधिकतर लोग इसी नियम का अनुपालन भी करते हैं। इसीलिए इन समयों में गया में यात्रियों की संख्या अधिकाधिक हो जाती है और शासन के लिए व्यवस्था करना चुनौतीपूर्ण कार्य हो जाता है। किन्तु यह परम्परा एवं लोकमत भी शास्त्रसम्मत नहीं है। वायुपुराण[20] में स्पष्ट निर्देश है कि गया में सभी समय पिण्डदान किया जा सकता है, यहाँ तक कि अधिमास, जन्मदिन, गुरु–शुक्र के अस्त तथा सिंह राशि पर गुरु के रहने पर भी गया यात्रा त्याज्य नहीं है।

---

13. श्राद्ध के अवसर पर ब्राह्मण को भोजन करा कर पितरों को तृप्त करने का विकल्प शास्त्रों में अवश्य है, किन्तु यह विकल्प श्राद्ध करने में असमर्थ होने पर ही अनुपालनीय है।
14. आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियः।
    पशून् सौख्यं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्।। पी0वी0 काणे, धर्मशास्त्र का इतिहास, 3, 1205 पाद टिप्पणी 15
15. श्राद्धात्परतरं नान्यक्षच्छ्रेयस्करमुदाहृतम् ।
    तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्राद्धं कुर्याद्विचक्षणः।। स्मृतिचन्द्रिका, श्राद्ध, 333
16. चतुर्दशी को केवल शास्त्रादि द्वारा मरे हुए का ही श्राद्ध किया जाता है। कूर्मपुराण, उपरिविभाग, 20/22
17. प्रतिपत्यप्रभृति ह्यान्यास्तिथयः कृष्णपक्षके।
    चतुर्दर्शी वर्जयित्वा प्रशस्ता ह्युत्तरोत्तराः।। कूर्मपुराण, उपरिर्विभाग, 20/3
    अमावस्याष्टकास्तिस्त्रः पौषमासादिषु त्रिषु।
    तिस्त्राश्चान्वष्टकाः पुण्या माघी पंचदशी तथा।। वही, 20/4
18. भरणी पितृपक्षे तु महती परिकीर्तिता।
    अस्यां श्राद्धं कृतं येन स गयाश्राद्धकृद्भवेत् ।। निर्णयसिन्धु, पृ. 315 पर उद्धृत।
19. नारदपुराण के अनुसार रुद्रपद पर भगवान श्रीराम ने स्वयं पिण्डदान किया था। उस समय उनके पिता दशरथ स्वयं पिण्ड लेने आए थे। किन्तु राम ने पिता के हाथ में पिण्ड न देकर भूमि में रख दिया था क्योंकि पिण्ड हाथ में देने का निषेध है।
20. गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दद्याद्विचक्षणः। वायुपुराण, 105/18, तुलनीय नारदपुराण, उत्तरभाग, 45।

अग्निपुराण[21] में भी कहा गया है कि गयातीर्थ में काल का कोई नियम नहीं है। यहाँ प्रतिदिन पिण्डदान किया जा सकता है।

मिथक चार : आम तौर पर देखा जाता है कि लोग गया में श्राद्ध तथा पिण्डदान माता–पिता दोनों के परलोकगमन के बाद ही करते हैं। लोकमत में ऐसा प्रचलित भी है कि दोनों का एक साथ ही किया जाय। किन्तु ऐसा शास्त्रीय विधान नहीं है। अग्निपुराण में स्पष्ट निर्देश है कि गया में अष्टका तिथियों, आभ्युदयिक कार्यों तथा पिता आदि की क्षयाह तिथियों में भी माता के लिए पृथक श्राद्ध किया जा सकता है। अन्य तीर्थों में स्त्री का श्राद्ध उसके पति के साथ ही होता है। लोग अपनी सुविधा, समय तथा अर्थ की बचत के लिए ही पिता एवं माता की मृत्यु के बाद दोनों का गया श्राद्ध साथ–साथ सम्पन्न करते हैं। यदि कोई चाहे तो जिसकी मृत्यु पहले हो गयी हो, उसका श्राद्ध सम्पन्न कर सकता है। ऐसे कुछ उदाहरण मिलते भी हैं।

मिथक पांच : गयावालों अर्थात् गया के तीर्थ पुरोहितों (गया के ब्राह्मणों) का अपना विशिष्ट समुदाय है। उसमें किसी अन्य के प्रवेश की तनिक भी गुंजाइश नहीं है। वायुपुराण[22], अग्निपुराण[23], गरुड़पुराण[24] आदि में ऐसा उल्लेख मिलता है कि विष्णु द्वारा गयासुर को वरदान देने के बाद ब्रह्मा ने गया के ब्राह्मणों को पचपन गांव, पांच कोस तक विस्तृत गया क्षेत्र, कामधेनु गाएं, कल्पतरु तथा अन्यान्य विविध उपहार दिया किन्तु यह शर्त रखी कि वे न तो किसी से भिक्षा मांगेंगे न दान लेंगे। किन्तु यम (धर्म) द्वारा सम्पादित यज्ञ में उन्होंने पौरोहित्य कर्म किया तथा दक्षिणा मांगी। इस पर ब्रह्मा ने उन्हें लोभी, विद्याविहीन तथा सदा ऋणी रहने का शाप दिया तथा उनसे कामधेनु, कल्पवृक्ष तथा अन्य उपहार छीन लिया। तब ब्राह्मणों ने अपनी जीविका का साधन ब्रह्मा से मांगा। ब्रह्मा ने उनसे कहा कि ''इस तीर्थ से तुम लोगों की जीविका चलेगी। जो लोग गया की यात्रा करेंगे वे तुम्हारी पूजा करेंगे तथा हव्य, कव्य, धन आदि से तुम्हारा सत्कार करेंगें।'' इस प्रकार पुरातन काल से गया तीर्थयात्रियों के दान–दक्षिणा से उनकी जीविका चलती आ रही है। हालांकि समय के मुताबिक अब कुछ लोग अन्य पेशे में भी सक्रिय हो रहे हैं। आम धारणा है कि गयावाल यात्रियों से सुफल बोलने के नाम पर अधिकाधिक दक्षिणा की अपेक्षा रखते हैं।

21. न कालादि गयातीर्थे दद्यात्पिण्डांश्च नित्यशः।। अग्निपुराण, 115/8
22. वायु पुराण, 106/73–84
23. अग्निपुराण, 1/4/33–39
24. गरुड़पुराण, 82/14